स्व्यातोस्लाव सारवनोव

अनूठे जहाज

अनूठे जहाज़

स्व्यातोस्लाव साख़र्नोव

सागरों में जहाज़ चलते हैं। भाप छोड़ते हैं, नुकीले सिरों से पानी को चीरते हैं और अपने काम-काज पूरे करने की उतावली में रहते हैं।

किसी जहाज़ की धुआं-चिमनी ऊंची होती है और किसी की नीची। कोई तो तीन बजरे आसानी से खींच ले जाता है और कोई खुद भी बड़ी मुश्किल से रेंगता है। कुछ जहाज़ सुन्दर होते हैं और कुछ भद्दे। प्रत्येक भिन्न-भिन्न होता है।

इन जहाज़ों के भाग्य भी अलग-अलग होते हैं – कोई खुशकिस्मत, तो कोई बदकिस्मत, किसी को बड़ा आदर-सत्कार मिलता है, तो किसी को भुला दिया जाता है।

लोगों की तरह जहाज़ भी अलग-अलग और अनूठे होते हैं।
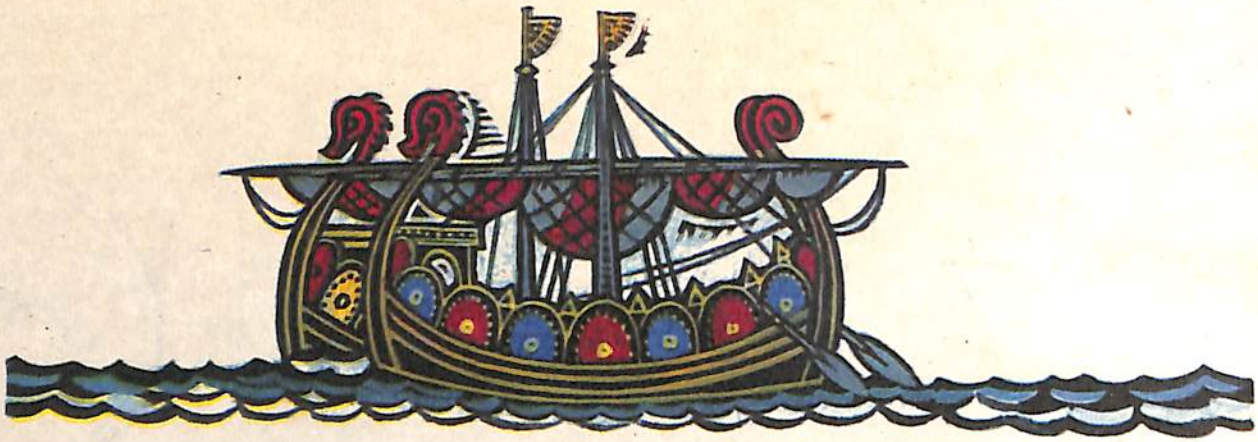
अग्रभाग पर अजगर मढ़ित

बहुत पुरानी बात है कि नार्वे के ठण्डे सागर में समुद्री डाकुओं के, जिन्हें वीकिंग कहते थे, जहाज़ चला करते थे। इन जहाज़ों के सामने वाले सिरों पर लकड़ी को काटकर बनाये गये अजगर-सिर मढ़े रहते थे।

एक बार क्या हुआ कि किसी शान्तिपूर्ण नगर को लूटने के बाद वीकिंगों के जहाज़ों को तूफ़ान ने घेर लिया। तेज़ हवा उन्हें देर तक दौड़ाती रही और आखिर धरती दिखाई दी। काले पर्वतों के बीच उन्हें हरे-भरे चरागाह नज़र आये। बहुत समय तक समुद्र में कठिन वक्त बिताने के बाद इन लोगों को यह धरती फूलती-फलती प्रतीत हुई। उन्होंने इसे हरी धरती यानी ग्रीनलैंड का नाम दिया। वे यहीं बस गये और यहीं से अमरीका के तटों की ओर जाने लगे। हर जहाज़ तो ऐसी कठिन यात्रा के बाद वापिस नहीं आता था, किन्तु ऐसे भी थे जो कई बार महासागर के आर-पार आये-गये।

वीकिंगों का जब कोई मुखिया मरता था, तो वे उसके जहाज़ को भी उसकी बगल में दफ़ना देते थे – वीकिंग मानते थे कि ऐसा कोई मार्ग नहीं जहां से मज़बूत जहाज़ तुम्हें वापिस न ले आये।

कारवेल जहाज़

कोलम्बस ने जब महासागर के पार जाने का इरादा बनाया, तो यह कहकर उसे ऐसा करने से मना किया गया:

"महासागर के पार धरती का अन्त हो जाता है," उसे बताया गया, "सागर भी वहां खत्म हो जाता है और पानी बहुत शोर करता हुआ एक खड्ड में जा गिरता है। अगर कोई खड्ड में गिरने से बच गया और वापिस लौटने में सफल भी हो गया, तो लौटते हुए रास्ते में भूख तथा बीमारी से मर जायेगा।"

किन्तु इस सब के बावजूद कोलम्बस ने जोखिम उठाई। उसके कारवेल जहाज़ महासागर में बढ़ चले। इन जहाज़ों के पहलू खड़े और पृष्ठ भाग ऊंचे तथा नक्काशीदार थे। ये जहाज़ छोटे-छोटे थे और जब तूफ़ान आता, तो वे टीलों जैसी ऊंची लहरों में एक-दूसरे की नज़र से ओझल हो जाते।

किन्तु कारवेल हठपूर्वक आगे बढ़ते ही गये। कोलम्बस ने महासागर को पार किया और नई दुनिया यानी अमरीका को खोज लिया।

धरती गोले की तरह गोल सिद्ध हुई। लोगों ने जहाज़ों पर सारी दुनिया का चक्कर लगाया।
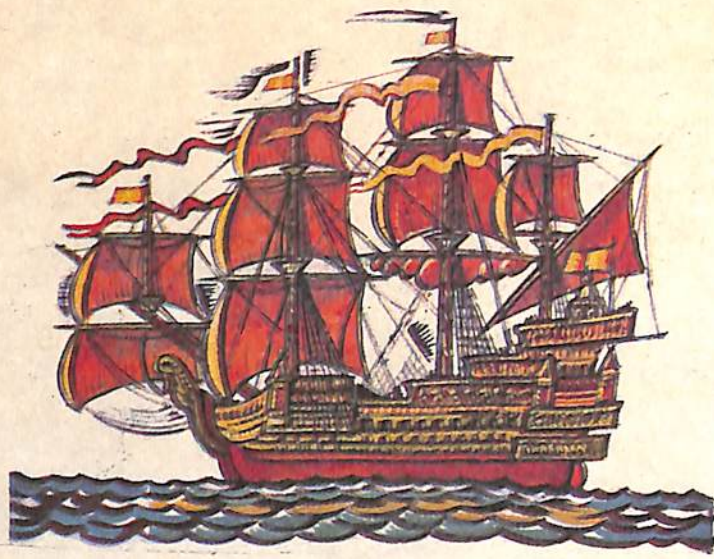
एक दिन चलनेवाला जहाज़

नये जहाज़ का निर्माण आरम्भ होने के पहले स्वीडन के बादशाह ने इंजीनियरों को अपने पास बुलाया और हुक्म दिया :

"मैं चाहता हूं कि यह जहाज़ दुनिया में सबसे बड़ा, सबसे अधिक सुन्दर, सबसे अधिक तेज़ और शक्तिशाली हो।"

"लेकिन, हुज़ूर," इंजीनियरों ने आपत्ति करने की कोशिश की।

"मैं कोई लेकिन-वेकिन नहीं सुनना चाहता।"

चुनांचे ऐसा जहाज़ बनाया गया। उसपर अनेक तोपें थीं, सजावट का बहुत साज़-सामान था, बहुत ही सुन्दर केबिन और बहुत ही ऊंचे-ऊंचे मस्तूल थे। उसका नाम था – 'गुस्ताव वाज़ा'।

"देखेंगे कि वह सागर में चलता कैसे है!" बूढ़े, अनुभवी मल्लाहों ने कहा।

'गुस्ताव वाज़ा' खुले सागर में जाकर उलट गया।

तीन सौ साल बाद उसे सागर-तल से निकालकर बन्दरगाह में ला खड़ा किया गया। वह सागर में अब कभी नहीं जायेगा। एकसाथ ही सबसे बड़ा, सबसे अधिक सुन्दर, सबसे अधिक तेज़ और सबसे अधिक शक्तिशाली होना सम्भव नहीं।
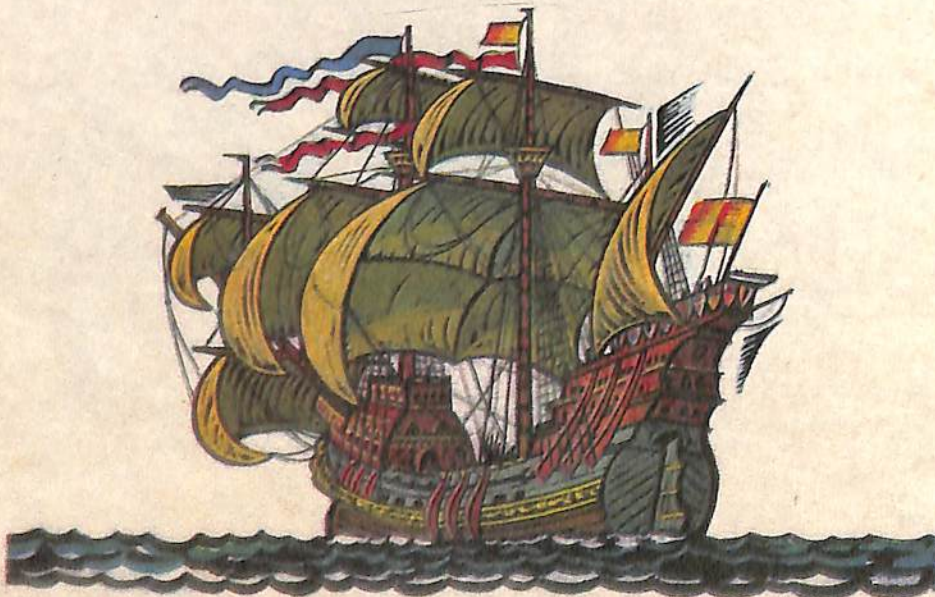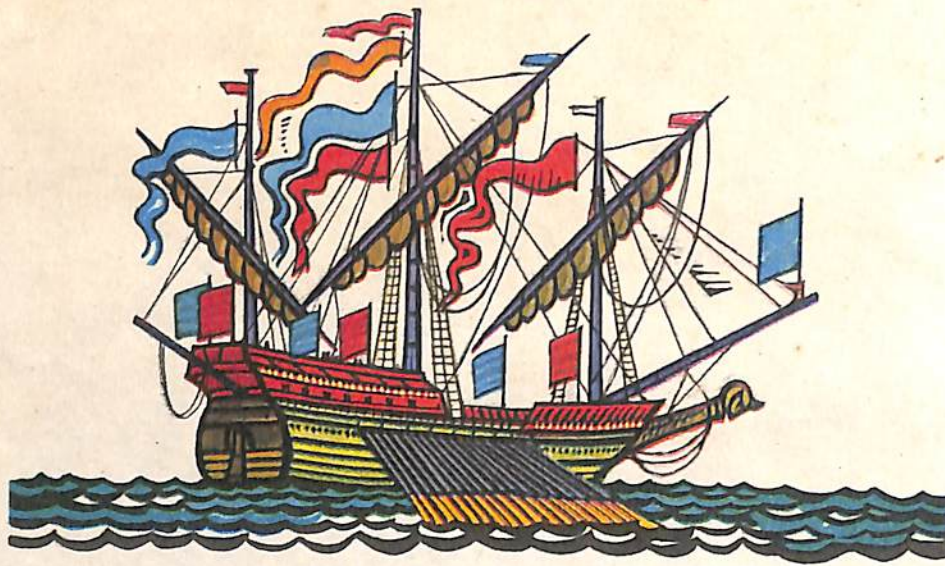
'विक्टरी' जहाज़ की अन्तिम यात्रा

एक बार अंग्रेज़ों के जंगी बेड़े, जिसकी कमान एडमिरल नेल्सन के हाथ में थी, और फ़्रांसीसी जंगी बेड़े के बीच घमासान लड़ाई हो रही थी। इसी लड़ाई को यह तय करना था कि समुद्र-युद्ध में किस पक्ष की जीत होती है।

एडमिरल नेल्सन की एक लड़ाई में एक आंख जाती रही थी। उसने उसी आंख पर दूरबीन लगाकर शत्रु के जंगी बेड़े को मानो देखा और कहा:

"मुझे तो कुछ भी भयानक नज़र नहीं आ रहा!"

अंग्रेज़ों ने लड़ाई जीत ली, किन्तु लड़ाई के अन्तिम क्षणों में नेल्सन शत्रु की गोली से घातक रूप में घायल हो गया। वह अपने ध्वजधारी 'विक्टरी' जहाज़ के डेक पर गिर गया।

लड़ाई समाप्त हो जाने पर एडमिरल के शव को जस्ते के ताबूत में लिटा दिया गया और फ़्रांसीसियों के गोलों से छलनी हुए अपने बचे-बचाये पालों को ऊपर उठाकर 'विक्टरी' अपने देश के बन्दरगाह में लौट आया।

नेल्सन को यहां दफ़नाया गया।

'विक्टरी' अपने एडमिरल नेल्सन के प्रति यहां भी निष्ठावान रहा। वह अब तक उसी अन्तिम घाट पर खड़ा है, जहां नेल्सन का शव लाया गया था।
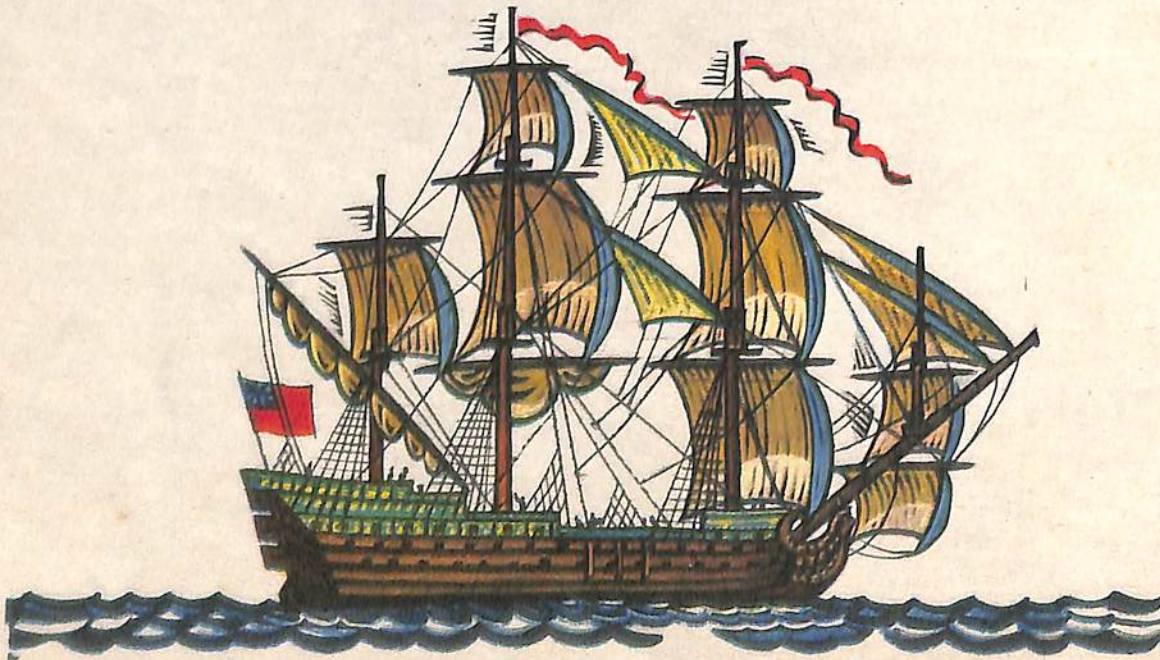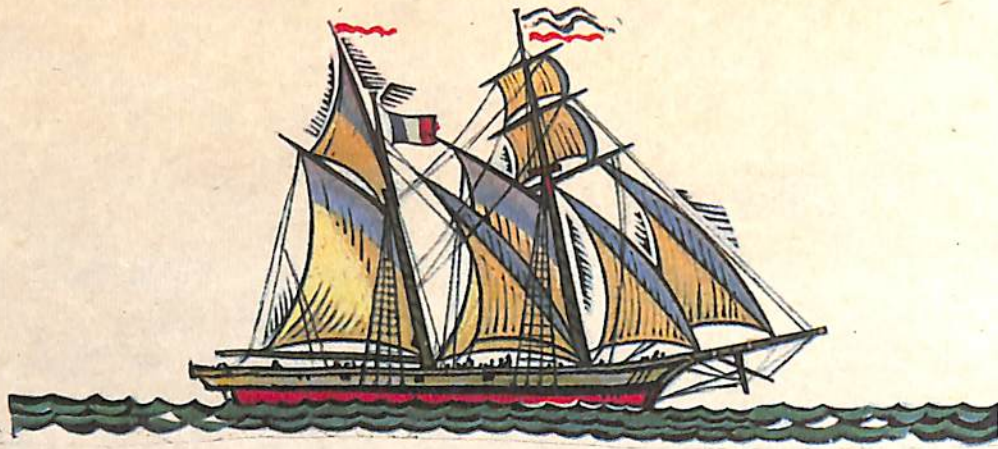
तीव्रगामी पोत

भाप से चलनेवाला एक जहाज़ सागर में जा रहा था। यह बड़ा और तेज़ रफ़्तार वाला जहाज़ था। अचानक उसे अपने पीछे, क्षितिज पर एक सफ़ेद धब्बा सा दिखाई दिया। वह लगातार बढ़ता जा रहा था। कप्तान ने दूरबीन लगाकर देखा – उसे तीन पालों वाला एक पोत बहुत तेज़ी से अपने जहाज़ के निकट आता दिखाई दिया।

कप्तान को पिछड़ना पसन्द नहीं था।

"रफ़्तार बढ़ाओ!" उसने हुक्म दिया।

जहाज़ की चिमनी से ढेरों धुआं निकलने लगा। किन्तु पालों वाला पोत इस भाप जहाज़ के अधिकाधिक निकट आता जा रहा था।

"और तेज़ करो!" कप्तान ने कोयला झोंकने वालों से मांग की।

जहाज़ की चिमनी से अब धुएं के बादल निकल रहे थे। जहाज़ के पिछवाड़े में प्रोपेलर द्वारा मथा जानेवाला पानी फेन उगल रहा था।

किन्तु पाल-पोत तो पीछे रहने की सोच ही नहीं रहा था। वह बड़ी आसानी से भाप वाले जहाज़ के बराबर पहुंचा, उससे आगे निकला और एक घण्टे बाद आंखों से ओझल हो गया।

'काट्टी सार्क' – कप्तान ने पाल-पोत के पृष्ठ भाग पर पढ़ा। उसे यह ज्ञात नहीं था कि 'काट्टी' दुनिया का सबसे तेज़ पाल-पोत है।

अब 'काट्टी सार्क' सदा के लिये लन्दन के बन्दरगाह में खड़ा है। उसका ढांचा जर्जर हो चुका है, पाल फटे-पुराने हैं। किन्तु उसका तीखा अग्रभाग पहले की तरह ही मानो आगे बढ़ने को बेचैन है।
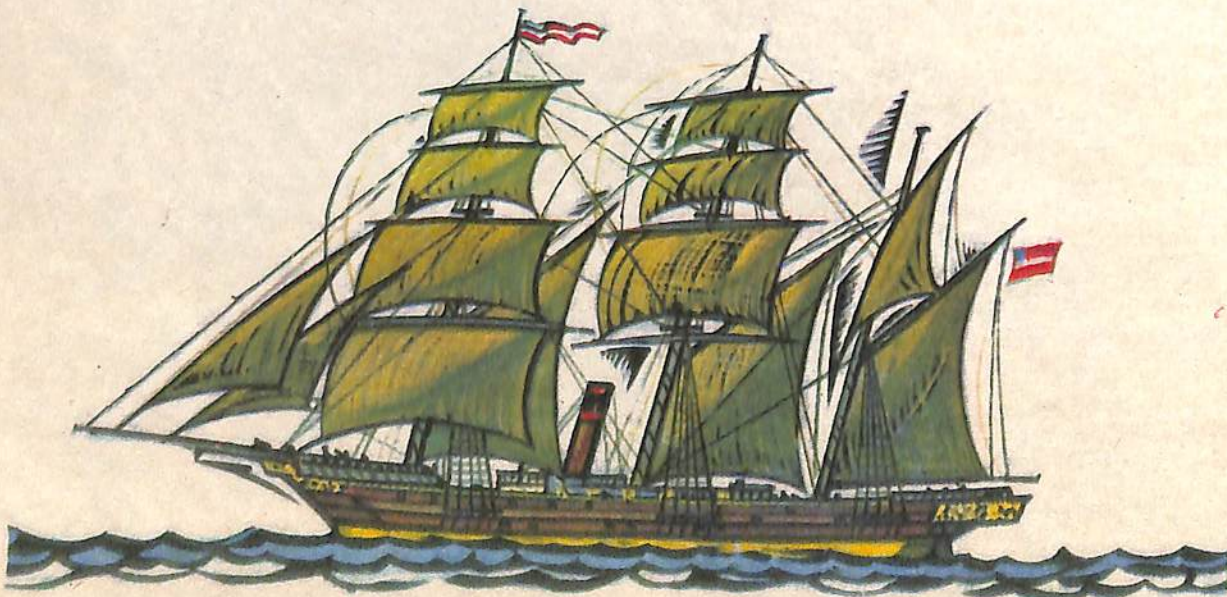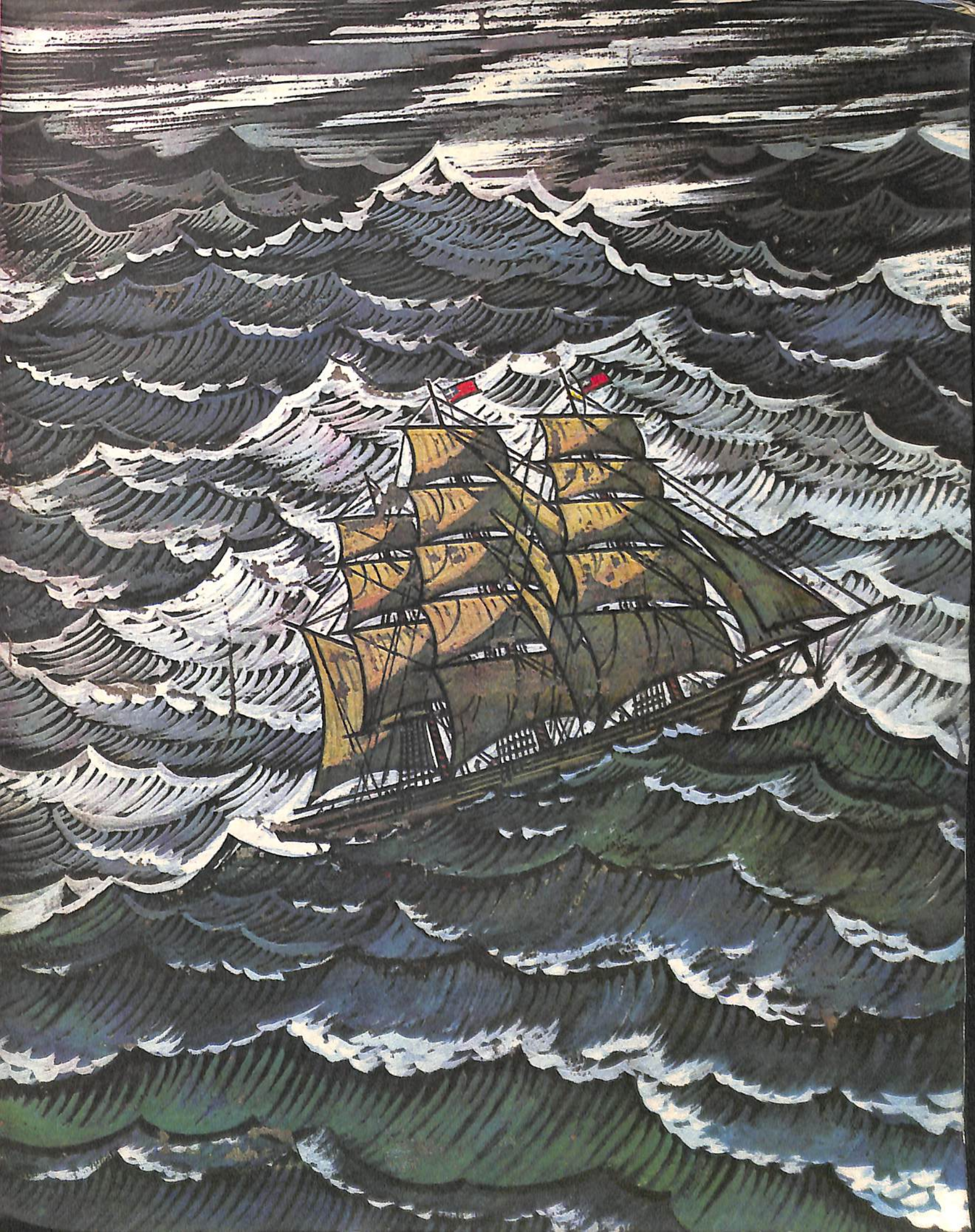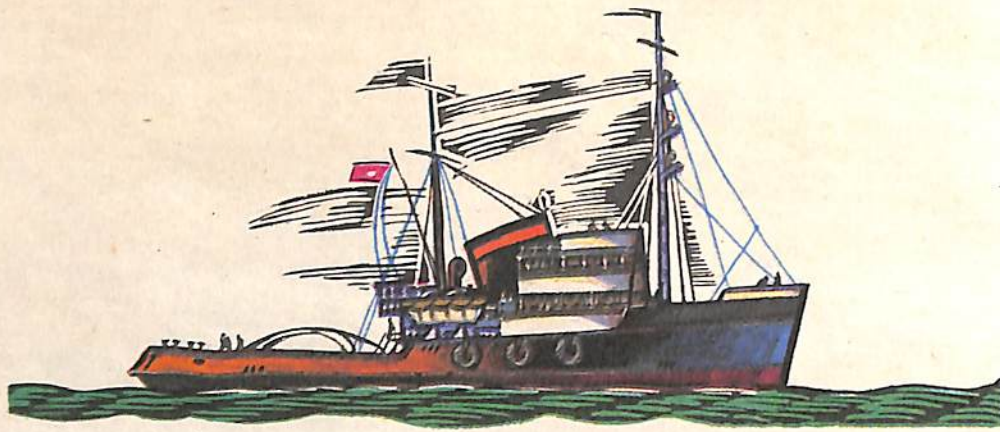
जहाज़, जो रेल-इंजन से टकराया

यह घटना इटली की गेनोआ बन्दरगाह में घटी।

महासागर में जानेवाला एक बड़ा जहाज़ तट के पास पहुंच रहा था। वह लम्बी यात्रा के बाद लौट रहा था। रास्ते में उसे बड़ी-बड़ी जलमग्न चट्टानों, छिछले जल और उष्ण-देशीय तूफ़ानों का सामना करना पड़ा था। वह इन सब खतरों से बच गया था और अब बड़े इतमीनान से तट के निकट आता जा रहा था।

इसी समय घाट पर एक इंजन पटरी पर चल रहा था। हुआ यह कि इंजन पटरी से उतर गया, कुछ और आगे लुढ़का और पानी के बिल्कुल निकट आकर ही रुका।

भीमकाय जहाज़ इंजन से जा टकराया। जहाज़ का अग्रभाग टूट गया और बहुत अर्से तक वह सागर में नहीं जा सका।

वैसे इंजन की भी दुर्गति हो गयी – पटरी से उतरने का यही नतीजा होता है!
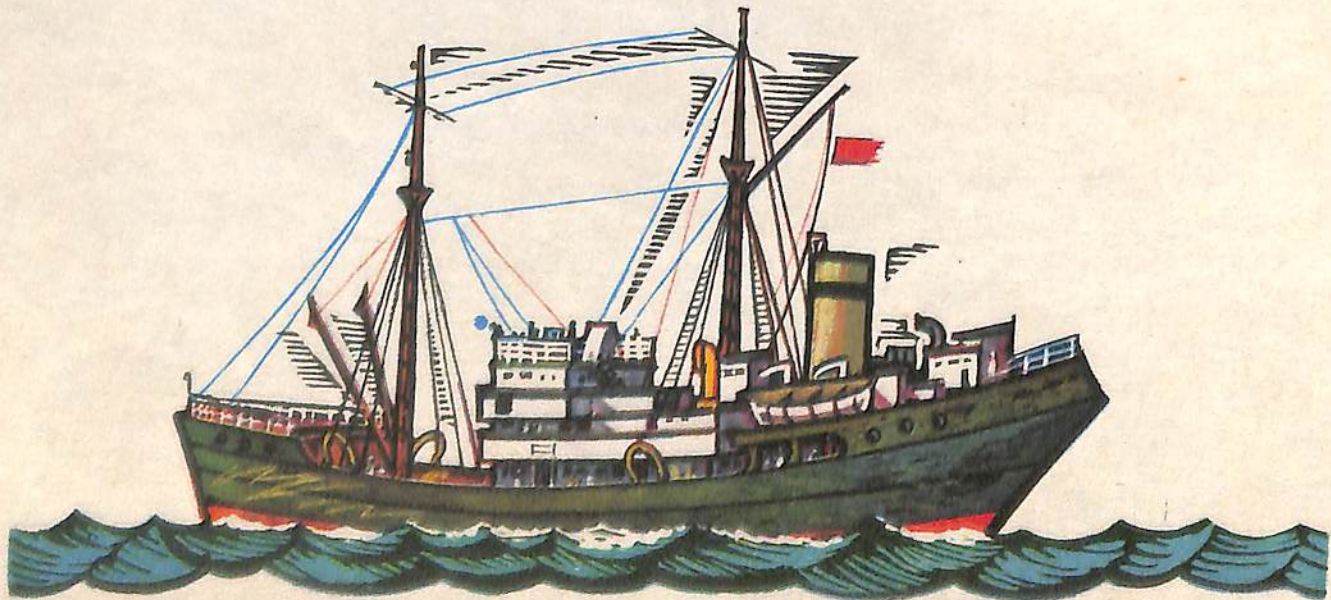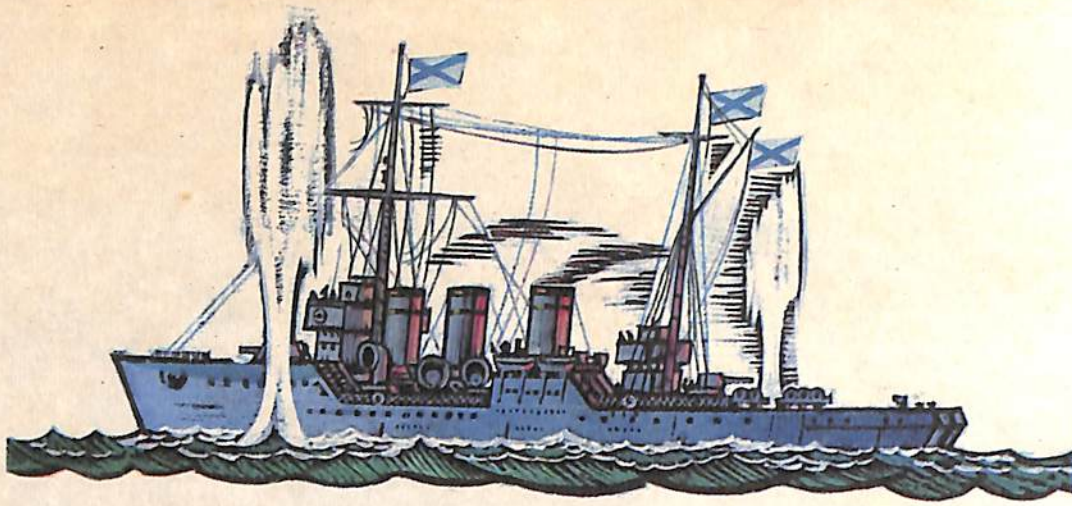
आसमानी रंग का टारपीडो जहाज़

जंगी जहाज़ को रंगने के लिये सफ़ेद, नीले और काले रंगों को मिलाया जाता है। जब टारपीडो जहाज़ 'ताशकन्द' को रंगा गया, तो नीला रंग कुछ अधिक ही पड़ गया। चुनांचे उसपर आसमानी रंग हो गया।

युद्ध चल रहा था। फ़ासिस्टों ने सेवास्तोपोल को घेर लिया था। 'ताशकन्द' टारपीडो जहाज़ को यह आदेश मिला कि वह घायलों, नारियों और बच्चों को शत्रु के घेरे में आये हुए नगर से निकालकर काकेशिया पहुंचा दे।

फ़ासिस्टों के हवाई जहाज़ सुबह से रात होने तक सागर के ऊपर चक्कर काटते रहे। उनके पंखों के नीचे काले बम लटकते दिखाई दे रहे थे। वे 'ताशकन्द' की खोज में थे। शत्रुओं को यह मालूम था कि काकेशिया के तट तक पहुंचने के लिये जहाज़ को पूरा दिन और पूरी रात का समय लगेगा।

रात घिरी, तो हवाई जहाज़ अपने अड्डों पर लौट गये और पौ फटते ही फिर से सागर के ऊपर चक्कर काटने लगे। किन्तु 'ताशकन्द' जहाज़ उनको नहीं मिला। आसमानी रंग का यह टारपीडो जहाज़ काले सागर में सबसे अधिक तेज़ रफ़्तार वाला जहाज़ था। उसने काकेशिया तक का रास्ता एक ही रात में तय कर लिया था।
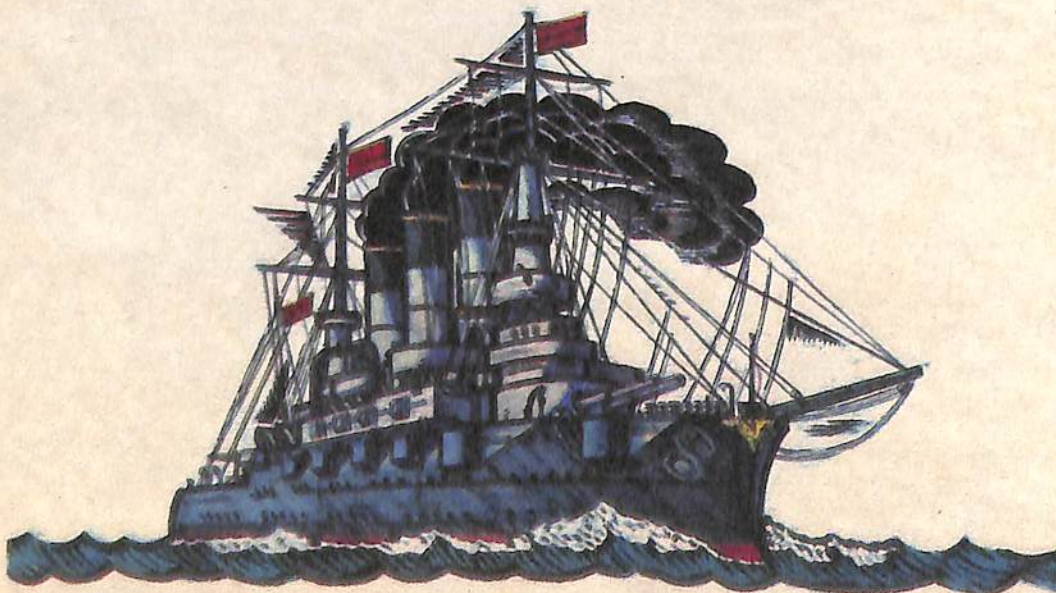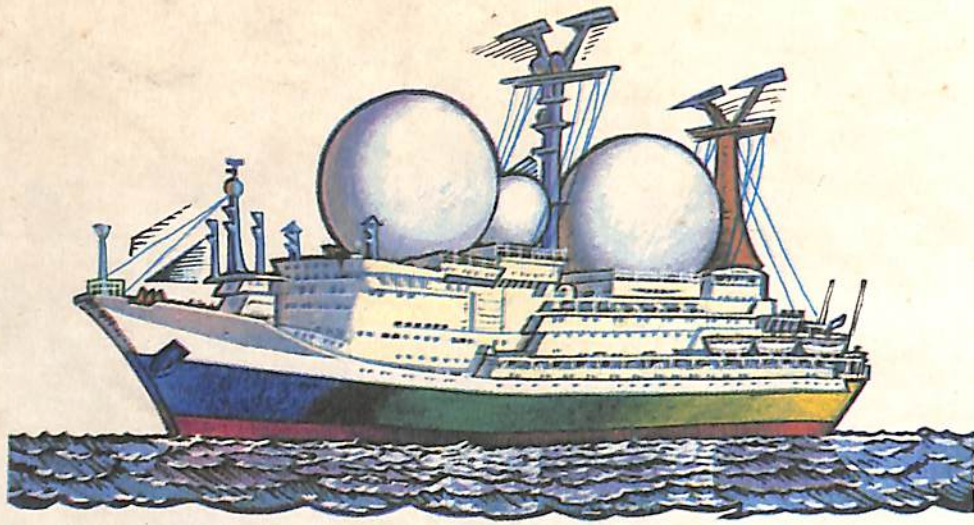
क्रान्ति-पोत

लेनिनग्राद के तटबंध बहुत सुन्दर हैं। वहां कांसे और ग्रेनाइट पत्थर की मूर्त्तियां और स्मारक हैं। जाड़े में जब हिमपात होता है, तो मूर्त्तियां के कंधों पर मानो सफ़ेद बरसातियां दिखाई देने लगती हैं। किन्तु लेनिनग्राद में एक विशेष स्मारक है। वह पानी में ही खड़ा है। यह है 'अव्रोरा' युद्ध-पोत।

जब अक्तूबर क्रान्ति आरम्भ हुई, तो 'अव्रोरा' नेवा नदी में पहुंच गया और उसने अपनी तोपों के मुंह शिशिर प्रासाद की ओर, जो शत्रुओं का गढ़ था, कर दिये।

'अव्रोरा' की तोप का दगना शिशिर प्रासाद पर धावा बोलने का संकेत था।

... तटबंध पर 'अव्रोरा' के सामने हमेशा लोगों की भारी भीड़ रहती है। लोग घण्टों तक इस युद्ध-पोत को देखते रहते हैं।

नेवा के दूसरे तट पर शिशिर प्रासाद है। वहां अब संग्रहालय है।

'अव्रोरा' फिर से शिशिर प्रासाद के सामने खड़ा है। किन्तु अब उसकी तोपों के मुंह झुके हुए हैं। नौसैनिक-विद्यालय के छात्र अब इस युद्ध-पोत के स्वामी हैं।
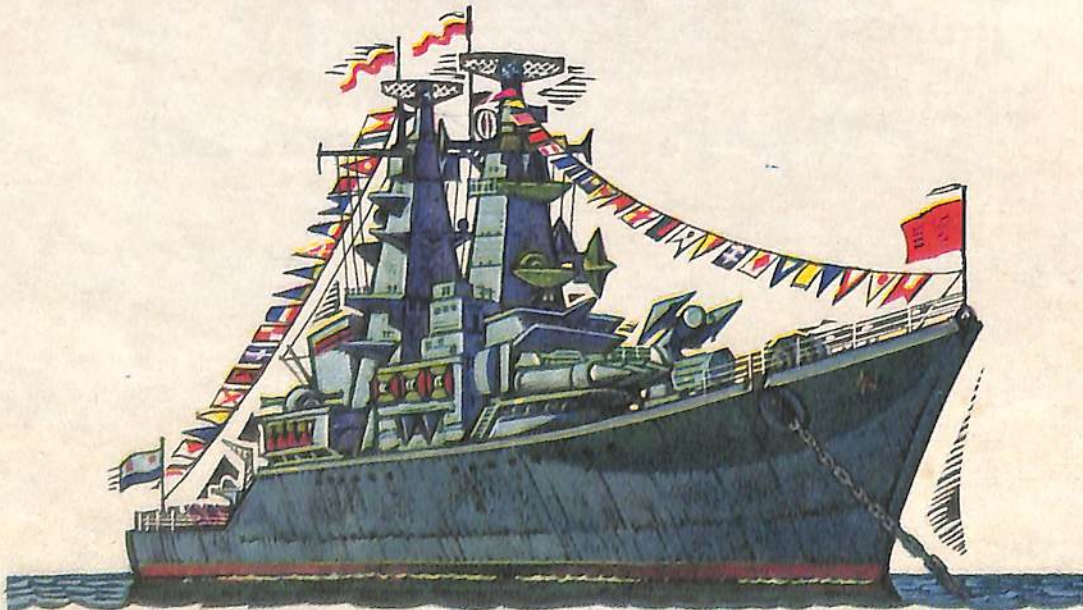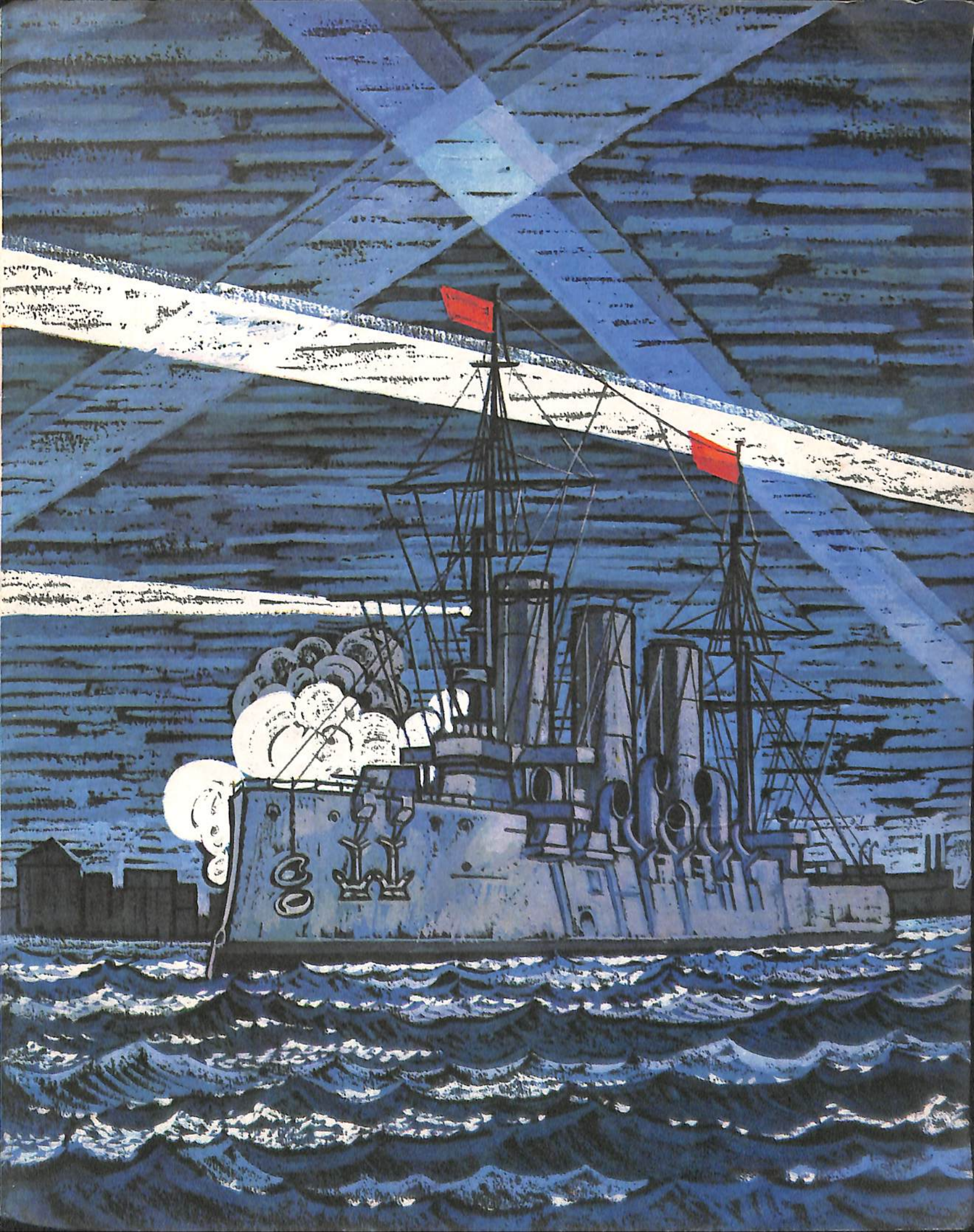
अनुवादक : मदनलाल 'मधु'
चित्रकार : व्लादीमिर सूरिकोव

С. Сахарнов
УДИВИТЕЛЬНЫЕ КОРАБЛИ
На языке хинди

С $\frac{70802\text{-}699}{014(01)\text{-}81}$ б. о.

4803010102

प्रगति प्रकाशन
मास्को